Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019 Special Issue – 114 (B)

हिंदी साहित्य के आधुनातन आयाम

अतिथी संपादक
डॉ. ए.आर. पाटील
प्रधानाचार्य
दादासो. दिगंबर शंकर पाटील कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
एरंडोल, जिला. जलगांव

विशेषांक संपादक :
प्रा. सौ. एस. व्ही. शेलार (हिंदी विभागाध्यक्ष)
डॉ. दीपक पाटील
दादासो. दिगंबर शंकर पाटील कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
एरंडोल, जिला. जलगांव

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज धनगर (येवला)

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

'RESEARCH JOURNEY' *Internationa' E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 114 (B)- हिंदी साहित्य के आधुनातन आयाम
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृ.क्र.
1	हिंदी गंजलो में मूल्य पतन विमर्श	डॉ. मधुकर खराटे	5
2	दलित नारी की शोषण मुक्ति की गाथा –आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द'	डॉ. जिजाबराव पाटील	10
3	किन्नरों के अंदरुनी संघर्ष की कथा – किन्नर कथा	डॉ. संजयकुमार शर्मा	14
4	हिंदी उपन्यासों में आदिवासी चेतना	डॉ. सुनील पानपाटील	17
5	रांगेय राघव के 'गदल' कहानी के माध्यम से नारी शक्ती का परिचय	डॉ. आर.के. जाधव	21
6	परंपरा से विद्रोह करता स्त्री विमर्श	डॉ. जयश्री गावीत	24
7	'अबला की मंजिल' कहानी संग्रह में नारी विमर्श	डॉ. महेंद्र रघुवंशी	28
8	हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी विमर्श	डॉ. योगेश पाटील	31
9	जीवन संध्या की संवेदनहीन कथा 'गिलीगडू'	डॉ. चंद्रमादेवी पाटील	34
10	कृष्णा सोबती के उपन्यासों में चित्रित नारी	डॉ. विजयप्रकाश शर्मा	37
11	नमिता सिंह की कहानियों में नारी जीवन	डॉ. अशफाक सिकलगर	41
12	संजीव के उपन्यासों में आदिवासी जन-जीवन	डॉ. अशोक मराठे	45
13	किन्नर विमर्श के परिप्रेक्ष्य में 'यमदीप' उपन्यास का मूल्यांकन	डॉ.महेंद्रकुमार वाढे	49
14	गीतिकाव्य 'कनुप्रिया' में आधुनिक युगबोध	डॉ. अभयकुमार खैरनार	53
15	आधुनिक जन-संचार माध्यम और हिंदी भाषा	डॉ. प्रमोद पाटील	56
16	नारी आत्मसंघर्ष की कथा 'जलतरंग'	डॉ. संजय ढोडरे	59
17	दिव्यांगजनों का पुनर्वसन एवं साहित्यिक योगदान	प्रा. स्वाती शेलार	63
18	नारी विमर्श – यथार्थ की अनुभूति	डॉ. विजय घुगे	67
19	'बदशक्ल होने के त्रासदी का सच- चित्रा मुद्गल की लाक्षागृह कहानी के विशेष संदर्भ में	डॉ. राजेंद्र ब्राह्मणे	70
20	आदिवासी विमर्श के परिप्रेक्ष्य में ओमप्रकाश वाल्मिकी की कहानियाँ	डॉ. चंद्रभान सुरवाडे	75
21	हिंदी नाटकों में नारी विमर्श (आधे-अधुरे एवं सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक)	प्रा. माधुरी ठाकरे	79
22	समकालीन हिंदी गजलकार जहीर कुरेशी के गाजलों में नारी विमर्श	डॉ. सुनील पाटील	82
23	भीष्म साहनी की कहानियों में वृद्ध जीवन की त्रासदी	डॉ. कल्पना पाटील	86
24	किन्नरों की समस्याएँ एवं समाधान	डॉ. सविता चौधरी	90
25	मंजुल भगत के 'टूटा हुआ इंद्रधनुष्य' उपन्यास में स्त्री विमर्श	डॉ. दीपक पवार	99
26	महादेव टोप्पो की कविताओं में समकालीन परिदृश्य	डॉ. ए. एम. पवार	102
27	हिंदी साहित्य की जटिलताओं में दिव्यांग विमर्श	डॉ. विजय सोनजे	105
28	मैत्रयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री	डॉ. राजेश भामरे	110
29	उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में नारी चेतना	डॉ. भारती वळवी–वाघ	114
30	नारी जीवन की संवेदनाओं को दर्शाती कहानियाँ	डॉ. विनोद पाटील	118
31	हिंदी गजल साहित्य में नारी विमर्श	डॉ. मालती शिंदे-चव्हाण	121
32	वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में चित्रित स्त्री विमर्श	डॉ. के. डी. बागुल	125
33	'जूठन'- दलित विमर्श का प्रामाणिक दस्तावेज	डॉ. रविंद्र खरे	128
34	हिंदी कहानी और थर्ड जेंडर की मर्दानगी	प्रा. मारोती लुटे	132
35	'मैला आँचल' उपन्यास में चित्रित संथालो का संघर्ष	डॉ. वनिता पवार-निकम	136

मंजुल भगत के 'टूटा हुआ इंद्रधनुष्य' उपन्यास में स्त्री विमर्श

प्रा.डॉ.दीपक विनायकराव पवार
सहायक प्राध्यापक
दिगंबरराव बिंदू महाविद्यालय
भोकर, जि.नांदेड
9923777008

आज की महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में यथार्थ जीवन की अभिव्यक्ति अत्यंत सुंदरता से व्यक्त हुई है। साठोत्तरी कालखंड में लीला अवस्थी, इंदिरा नूपूर, मृदुला गर्ग, दिप्ती खंडेलवाल, प्रभा खेतान, नासिरा शर्मा, मालती जोशी, ममता कालिया, राजी सेठ, मैत्रेयी पुष्पा, मंजुल भगत आदि कई महिला उपन्यासकार हिंदी में नारी समाज की विविधमुखी समस्याओं का चित्रण कर रही है। समकालीन महिला कथाकारों में विशेष रुप से सन 1970 के बाद आयी हुई महिला कथाकारों में मंजुल भगत एक ऐसा नाम है, जिसने अपने कथा साहित्य की मौलिकता और विषय के नये पन से हिंदी कथा-साहित्य में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है। मंजुल भगत ने अपने उपन्यास और कहानियों के माध्यम से अपनी पहचान खुद स्थापित की है। मंजुल भगत के संपूर्ण कथा-साहित्य की यह विशेषता है कि, वह कहीं पर भी न तो पारंपारिक है और न ही इतना आधुनिक कि, जहाँ जीवन के कई मूल्य अर्थहीन लगते हो। निःसंदेह मंजुल भगत के कथा-साहित्य में नारी जीवन से जुडे हुए पारम्पारिक विषय आये है और कहीं-कहीं प्रेम का त्रिकोण भी हैं, किंतु लेखिका ने इस विषय को जिस तरह नवीन परिवेश और मान्यताओं के साथ प्रस्तुत किया है, उसके परिणाम स्वरूप उसमें कहीं पर भी पारम्पारिक बातें दिखाई नहीं देती है। मंजुल भगत के उपन्यास साहित्य में नारी का अत्यंत शालीन और गौरवपूर्ण रूप व्यक्त होने के साथ-साथ जीवन से संघर्ष करनेवाली नारी का रूप भी बड़े प्रभावपूर्ण रूप में व्यक्त हुआ है।

'टूटा हुआ इंद्रधनुष्य' मंजुल भगत का यह प्रथम उपन्यास है, जो सन 1976 में प्रकाशित हुआ था। राजकमल पेपर बॅक्स में यह उपन्यास प्रथम संस्करण के रूप में सन 1988 में प्रकाशित हुआ। मंजुलजी का यह उपन्यास मूल-संस्करण के रूप में प्रेम की त्रिकोणात्मक कहानी के आधार को लेकर चला है। पर इस उपन्यास में चित्रित प्रेम का त्रिकोणात्मक रूप बिलकुल भिन्न रूप लिए हुए है। यह एक ऐसी कहानी है, जिसमें प्रेम का त्रिकोण मानवीय उन संबंधो को अधिक महत्वपूर्ण मानता है। जिसके आधारपर सभी एक दूसरे-के मानवीय रिश्ते से बंधे हुए है। मंजुलजी ने इस उपन्यास में नारी के स्वतंत्र और उसके आंतरिक द्वंद्व को अधिक महत्व दिया है। साथ ही साथ उन्होंने नारी मन की वेदना को भी बड़ी गहराई के साथ चित्रित किया है। इस उपन्यास में हमें ऐसे नारी चरित्र देखने को मिलते है, जिनके मन में परम्पराओं के प्रति न तो आकर्षण है और न ही लगाव। यह नारी चरित्र सुसंस्कृत और सुशिक्षित है। यह सडी गली परम्पराओं से घृणा करते है। उपन्यास में नारी चरित्रों के निर्माण में लेखिका ने नारी की मर्यादा और गरिमा का पूरा ध्यान रखा है। इस उपन्यास में चित्रित नारी चरित्रों का अपना व्यक्तित्व है, जिसे वे अत्याधिक महत्व देते है। वर्तमान जीवन की नृशंसता, घृणा और विश्वासघातों को व्यक्त करने का माध्यम उनके यह नारी चरित्र है।

यह उपन्यास, "स्त्री-पुरूष के बीच प्रेम और विवाह की, सापेक्षता का सवाल उठाता है। 'टुटा हुआ इंद्रधनुष्य' उपन्यास में दो नारी चरित्र प्रमुख है। एक है शोभना ओर दूसरी है अर्चना। लेखिका ने इन दोनों नारी चरित्रों के चत्रिण में शोभना के चरित्र पर अधिक ध्यान दिया है। शोभना ही इस उपन्यास की प्रधान नारी चरित्र है, जिसके इर्द-गिर्द संपूर्ण उपन्यास का कथाचक्र मंडराते रहता है। इस उपन्यास में लेखिका ने दो भिन्न-भिन्न प्रवृत्ती, प्रकृती, स्वभाव और मान्यताओं को लेकर चलनेवाली नारी चरित्रों का चित्रण किया है। उपन्यास के कथा चक्र में संध्या और जैनी नामक नारी चरित्रों का उल्लेख किया गया है, पर चरित्र चित्रण की दृष्टि से दोनों नारी चरित्र केवल उल्लेखित ही किये गये है, यद्यपि

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 114 (B)- हिंदी साहित्य के आधुनातन आयाम
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

संध्या का चरित्र विवाहित प्रेमी की संतान होने के कारण महत्वपूर्ण है, पर लेखिका ने उसे केंद्र में न रखकर शोभना के चरित्र को ही केंद्र में रखा है। यह उपन्यास प्रेम की एक ऐसी कथा है, जो आधुनिक के परिवर्तित और नवीन मूल्यों को पाठकों के सामने रखती है।

इस उपन्यास में मनीष शोभना से प्रेम करता है पर परिस्थितियों और घटना के कारण शोभना का विवाह प्रभात से होता है। इधर मनीष का विवाह अर्चना से होता है। इस विवाह के बात भी मनीष सदा ही शोभना से मिलने के लिए बड़ा ही व्याकूल रहता है। एक बार प्रभात कार्यालयीन काम से कलकत्ता जाता है, तो उसके अनुपस्थिति में मीनष शोभना के घर पहुँच जाता है। परिस्थितियाँ कुछ ऐसी हो जाती है कि, मनीष शोभना को पूरी तरह से आत्मसात कर लेता है। और फिर कई दिनों तक मनीष शोभना के घर आता गया और दोनों एक-दूसरे के और करीब आते गये। मनीष से लगातार संबंध में आने के कारण ही शोभना को संध्या नाम की पुत्री हुई। प्रभात को जब यह बात शोभना से ज्ञात हुई, तो उसने इस घटना को बडे सामान्य रूप में लिया। और शोभना को भी सामान्य रूप से लेने का आग्रह भी उसने किया था। पति-पत्नी के बीच संबंधों को नये रूप में आधुनिकता के स्तर यहाँ लेखिका ने चित्रित किया है। इस उपन्यास में शोभना के रूप में एक ऐसे नारी चरित्र को चित्रित किया है, जो विवाहित होने के बाद भी अपने पूर्व प्रेमी मनीष के साथ शारिरीक संबंध स्थापित करती है। मनीष भी शोभना से अत्याधिक प्रेम करता है और वह मन से चाहता है कि, उसका प्रणय परिणय में परिवर्तित हो जाए पर शोभना को यह स्वीकार नही। वह नये विचारों की आधुनिक नारी है। उसके विचारानुसार एक प्रेयसी और एक पत्नी दोनों का रूप बिलकुल अलग-अलग होता है। वह इन दोनों रूपों को एक-दुसरे से अलग रखकर ही उसे बनाये रखना चाहती है। प्रेम और विवाह के विषय में शोभना के अपने बिलकुल अलग और स्वतंत्र विचार है। उसके मतानुसार प्रेम आत्मा की, मन की आवश्यकता है, तो विवाह एक सामाजिक आवश्यकता है। इसी बात को लेकर उसने एक बार मनीष से कहा भी था कि, "लु के थपेड़ो में दो घण्टे झुलसकर शीतल जल पीने में जो तृप्ती है, वह आनंद ताल के समीप बेठकर अंजली भर-भरकर लगातार घूँट भरते रहने में नही।" शोभना के इन्हीं विचारों के कारण वह मनीष से प्रेम होते हुए भी विवाह प्रभात के साथ करती है। जिसकी दृष्टि जीवन के विषय में बिलकुल भिन्न और आधुनिक थी। विवाहोत्तर पर पुरूष से संबंध स्थापित करने में उसे किसी प्रकार का संकोच नही हुआ। क्योंकि वह मुलतः इस बात को मानकर चलती है कि, प्यार और विवाह दोनों अलग-अलग चिजें है। अपने इन आधुनिक विचारों से उसने पहले ही मनीष और प्रभात को अवगत कराया था। किंतु मनीष से गर्भ रहने के बाद ही उसे यह एहसास हुआ कि उसकी अपनी मान्यताएँ और जीवन विषयक मूल्य कितने अर्थहीन थे। अंत में लेखिका ने बडी कलात्मकता से दोनो नारी चरित्रों की मान्यताएँ अपनी संतानों को लेकर कैसे समान हो जाती है, इसका बड़ा ही सुखद चित्रण किया है।

मंजुलजी की लेखनी का ही यह चमत्कार है कि, शोभना और अर्चना जैसी भिन्न प्रकृति की नारी चरित्रों के चित्रण में उन्होंने न तो कही अस्वाभाविकता आने दी और न कहीं दोनों में किसी प्रकार के अनावश्यक मानसिक द्वंद्व का अवांछित चित्रण किया। उपन्यास में प्रसंग और घटनाएँ जिस प्रकार से मोड लेती है उसे देखते हुए संभवतः लेखिका ने शोभना के चरित्र को थोडासा भिन्न प्रकार का मोड दे दिया है। हो सकता है, भारतीय परंपरा, मान्यताओं और मूल्यों के अनुरुप यह मोड शोभना के चरित्र को लेकर, लेखिका को देना पड़ा है। तथ्य चाहे जो कुछ भी हो, पर लेखिका ने शोभना के रूप में जिस नारी को चित्रित किया है वह सर्व सामान्य व्यक्ति के जीवन में कदाचित ही देखने को मिले। विचारों का औदात्य मनुष्य को एक विशिष्ट स्तर पर पहुँचाता आवश्यक हैं, किंतु उसका अर्थ यह नही कि, व्यक्तिगत जीवन की अच्छाईयों और बुराईयों को भी वह मात्र उदात्त दृष्टिकोण के कारण एक जेसा ही समझे।

इस प्रकार नारी जीवन की विविध समस्याओं को मंजुलजी ने इस उपन्यस में बड़ी उत्कटता से उभारा है। समकालीन मध्यवर्गीय नारी जीवन की व्यक्तिगत जीवन से जुड़ी हुई समस्याओं को लेखिका ने बडी सूक्ष्मता से यहाँ चित्रित किया है। प्रेम, दाम्पत्य जीवन, विवाह जैसे रिश्तों को उन्होंने इस उपन्यास के माध्यम से नये रूप में पारिभाषित

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 114 (B)- हिंदी साहित्य के आधुनातन आयाम
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

कर उन्हें नये रूप में ढाला है। लगता है कि, जीवन के अनुभवों के आधार पर ही लेखिका ने समकालीन नारी की सामाजिक स्थिति और मानसिकता को गहराई से समझा है।

संदर्भ :

1. डॉ.उषा सक्सेना - हिंदी उपन्यास का शिल्पगत विकास
2. कुंवरलाल सिंह - हिंदी उपन्यास सामाजिक चेतना
3. डॉ.शीलप्रभा वर्मा -. महिला उपन्यासकारें की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ
4. मंजुल भगत - टूटा हुआ इंद्रधनुष्य
5. डॉ.पारोकांत देसाई - आधुनिक लेखिकाओं में नागरिय परिवेश के उपन्यास
6. सत्यप्रकाश मिलींद - हिंदी की महिला कसाहित्यकार
7. डॉ.मधु संधु - साठोत्तरी महिला कहानीकार